पी.जी.डी.टी.

अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम
(पी.जी.डी.टी.)

सत्रीय कार्य
2018

(जनवरी 2018 और जुलाई 2018 सत्रों में
प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

अनुवाद अध्ययन एवं प्रशिक्षण विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली–110 068

अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम
पाठ्यक्रम 01 से 04 (पी.जी.डी.टी.-01 से 04)
सत्रीय कार्य 2018

(जनवरी 2018 और जुलाई 2018 सत्रों में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.डी.टी.

प्रिय विद्यार्थियो,

जैसा कि 'अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम' की 'कार्यक्रम दर्शिका' में आपको बताया गया है कि इस स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम में पढ़ाई के साथ-साथ आपको कुछ सत्रीय कार्य भी करने हैं। इसके लिए चार पाठ्यक्रमों के अंतर्गत आपको एक-एक सत्रीय कार्य करना होगा। ये सत्रीय कार्य आपकी आंतरिक परीक्षा है। अतः इन्हें ध्यानपूर्वक और पूरे परिश्रम के साथ करें। प्रत्येक पाठ्यक्रम के सत्रीय कार्य आप अपनी सुविधा के अनुसार अलग-अलग प्रस्तुत कर सकते हैं और एक साथ भी प्रस्तुत कर सकते हैं :

पाठ्यक्रम	प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि	
	जनवरी 2018 में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों के लिए	जुलाई 2018 में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों के लिए
पी.जी.डी.टी.-01 अनुवाद : सिद्धांत और प्रविधि	**30.09.2018**	**31.03.2019**
पी.जी.डी.टी.-02 अनुवाद का भाषिक और सामाजिक पक्ष	**30.09.2018**	**31.03.2019**
पी.जी.डी.टी.-03 व्यावहारिक अनुवाद के विविध स्तर और क्षेत्र	**30.09.2018**	**31.03.2019**
पी.जी.डी.टी.-04 प्रशासनिक अनुवाद	**30.09.2018**	**31.03.2019**

उद्देश्य : प्रस्तुत कार्यक्रम के अंतर्गत आपको अनुवाद सिद्धांत और प्रविधि, अनुवाद के सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों, उसकी प्रक्रिया तथा बारीकियों की जानकारी देते हुए, विविध क्षेत्रों में अनुवाद का अभ्यास कराया गया है। सत्रीय कार्य का मुख्य उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और उसे कहाँ तक व्यवहार में ला सकते हैं। यानी आपको इस योग्य बनाना है कि अध्ययन के दौरान जो जानकारी आपको प्राप्त हुई है उसे अपने शब्दों में विधिवत प्रस्तुत कर सकें और अनुवाद कार्य में उसे व्यवहार में लाते हुए अच्छा अनुवाद कर सकें।

सत्रीय कार्य करने से पहले कुछ बातें

1) उत्तर के लिए फुलस्केप कागज का ही इस्तेमाल करें।

2) प्रत्येक सत्रीय कार्य के लिए अलग उत्तरपुस्तिका बनाएँ। इस तरह आपके चार सत्रीय कार्यों के लिए चार उत्तरपुस्तिकाएँ होनी चाहिए।

3) अपनी उत्तरपुस्तिका के प्रथम पृष्ठ के दाहिने कोने के सबसे ऊपर अपना नामांकन संख्या, पूरा पता लिखें तथा तिथि सहित हस्ताक्षर करें।

4) अपनी उत्तर-पुस्तिका के प्रथम पृश्ठ के बायें कोने पर कार्यक्रम का शीर्षक, पाठ्यक्रम का कोड, उसका शीर्शक, सत्रीय कार्य कोड तथा अध्ययन केंद्र का नाम/कोड लिखें।

आपका सत्रीय कार्य इस प्रकार आरंभ होना चाहिए :

कार्यक्रम का शीर्षक :	नामांकन संख्या : ..... नाम : ..... पता : ....
पाठ्यक्रम कोड :..... पाठ्यक्रम का शीर्षक : ..... सत्रीय कार्य कोड : ..... अध्ययन केंद्र का नामः	 हस्ताक्षर :..... तिथि : .....

5) पाठ्यक्रम के कोड तथा सत्रीय कार्य के कोड सत्रीय कार्य पर मुद्रित होते हैं और वहां से देखकर लिखे जा सकते हैं। प्रत्येक उत्तर के पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

6) अपने उत्तर केवल फुलस्केप कागज पर लिखें और उन्हें अच्छी तरह नत्थी कर दें। बहुत पतले कागज पर न लिखें। बायीं ओर 4 सेमी. का हाशिया छोड़ दें। एक उत्तर और दूसरे उत्तर के बीच कम से कम 4 पंक्तियों का स्थान छोड़ें। ऐसा करने से परीक्षक उचित स्थान पर अपनी टिप्पणी दे पाएंगे।

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

इस सत्रीय कार्य में आपसे तीन तरह के प्रश्न पूछे गए हैं। लंबे निबंधात्मक प्रश्नों के उत्तर लगभग 400 शब्दों में, और लघु निबंधात्मक प्रश्नों के उत्तर 200-250 शब्दों में देने हैं। व्यावहारिक अनुवाद संबंधी प्रश्नों के उत्तर समुचित कोश का उपयोग करते हुए प्रसंग और संदर्भानुसार देने हैं।

- प्रत्येक सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़ें और यदि कोई विशेष निर्देश दिए गए हों तो उनका पालन करें। सत्रीय कार्य जिन इकाइयों पर आधारित हैं उन्हें पढ़ लें। प्रश्न के संबंध में महत्त्वपूर्ण बातों को नोट कर लें, फिर उनको व्यवस्थित करके अपने उत्तर की रूपरेखा बनाएँ।

- जब आपको विश्वास हो जाए कि जो उत्तर आप देने जा रहे हैं संतोषजनक है, तब उन्हें साफ-साफ लिखें और जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं उन्हें रेखांकित कर दें।

- अनुवाद के व्यावहारिक प्रश्नों को करते समय ''कोश'' का भरपूर प्रयोग करें। विषय एवं संदर्भ का विशेष ध्यान रखें। हिंदी और अंग्रेजी के कथनों की तुलना करें। यह देखें कि अनुवाद से वही अर्थ निकल रहा है जो मूल सामग्री से निकलता है। यह भी सुनिश्चित करें कि आपका अनुवाद लक्ष्य भाषा की उपयुक्त शैली के अनुरूप है, स्रोत भाषा की छाया मात्र नहीं। अनुवाद में मूल लेखन की–सी सहजता लाने के लिए अपनी कल्पना शीलता और लेखन–क्षमता का उपयोग करें।

- निबंधात्मक प्रश्नों का उत्तर देते समय प्रस्तावना और निष्कर्श के संबंध में विशेष ध्यान दें। प्रस्तावना संक्षेप में होनी चाहिए। इसमें यह बताएँ कि प्रश्न से आप क्या समझते हैं और आप क्या लिखने जा रहे हैं। निष्कर्ष में आपके उत्तर का सार होना चाहिए। उत्तर सुसंगत और सुसंबद्ध हों। वाक्यों और अनुच्छेदों में परस्पर तालमेल होना चाहिए। उत्तर सत्रीय कार्य में दिए गए प्रश्न से संबद्ध होना चाहिए। यह देख लें कि आपने प्रश्न में निहित सभी मुख्य बातों के उत्तर शामिल किए हैं।

सत्रीय कार्य पूरा करने के बाद यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपके उत्तर तार्किक और सुसंगत हों,

ख) वाक्यों और अनुच्छेदों (Paragraphs) के बीच स्पष्ट क्रमबद्धता हों,

ग) उत्तर सही ढंग से लिखे गए हों तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति उत्तर के पूर्णतया अनुरूप हों,

घ) उत्तर प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक लंबे न हों, और

ङ) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से वर्तनी और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

च) उत्तर अपने हाथ से लिखें। इसे मुद्रित या टाइप न करें। अपने उत्तर को विश्वविद्यालय द्वारा आपके पास भेजी गई इकाइयों से नकल न करें। यदि आप ऐसा करते हैं तो आपको कम अंक मिलेंगे।

छ) अन्य विद्यार्थियों के उत्तरों से नकल न करें, यदि यह पाया जाता है कि आपने नकल की है तो आपके सत्रीय कार्यों को अस्वीकृत कर दिया जाएगा।

ज) प्रत्येक सत्रीय कार्य को अलग–अलग लिखें।

झ) प्रत्येक उत्तर के साथ उसके प्रश्न की संख्या लिखें।

ञ) सत्रीय कार्य को पूरा करके इसे अध्ययन केंद्र के पास भेज दें। अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य की उत्तर-पुस्तिका को किसी भी स्थिति में **मुख्यालय के विद्यार्थी मूल्यांकन प्रभाग को मूल्यांकन के लिए न भेजें।**

ट) अध्ययन केंद्र में सत्रीय कार्य को प्रस्तुत करते समय निर्धारित प्रेषण एवं पावती कार्ड पर अध्ययन केंद्र से (सत्रीय कार्य प्राप्त किए) प्राप्ति दर्ज करा लें।

ठ) यदि आपने क्षेत्र को बदलने के संबंध में निवेदन किया है तो आप अपने सत्रीय कार्यों को अपने पहले के अध्ययन केंद्र में ही तब तक भेजते रहें जब तक विश्वविद्यालय की ओर से आपको क्षेत्रीय केंद्र बदलने की सूचना नहीं भेज दी जाती।

पी.जी.डी.टी-01
अनुवाद : सिद्धांत और प्रविधि
सत्रीय कार्य

कार्यक्रम कोड : पी.जी.डी.टी.
पाठ्यक्रम कोड : पीजीडीटी-01
सत्रीय कार्य कोड : पीजीडीटी-1/एएसटी-01(टीएमए)/2018

अधिकतम अंक : 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 400 शब्दों में दीजिए।** **5**x8=40
   - i) प्राचीन भारतीय साहित्य के पश्चिम में हुए विभिन्न अनुवादों की सोदाहरण चर्चा कीजिए।
   - ii) भाष्य तथा टीका में क्या अंतर है? सोदाहरण समझाइए।
   - iii) 'व्यतिरेकी विश्लेषण और अनुवाद' से आप क्या समझते हैं? विस्तार से स्पष्ट कीजिए।
   - iv) अनुवाद प्रक्रिया के न्यूमार्क द्वारा प्रस्तावित प्रारूप की चर्चा कीजिए।
   - v) पाठधर्मी और प्रभावधर्मी अनुवाद में क्या अंतर है? सोदाहरण समझाइए।
   - vi) लिप्यंकन तथा लिप्यंतरण में क्या अंतर है? सोदाहरण समझाइए।
   - vii) एक अनुवादक की क्या–क्या सीमाएं होती हैं? विस्तार से समझाइए।
   - viii) कोश के विभिन्न प्रकारों की चर्चा कीजिए।

2. निम्नलिखित शब्दों को कोश के क्रम में लिखिए : 4

   क) सिद्धांत, संपादन, संक्षिप्त, संकलन, सामर्थ्य, सामग्री, संरचना, संयोजन, सौभाग्य, सामान्यतया, संख्या, संकेत।

   ख) Linear, Lateral, Longitude, Learning, Ladder, Leadership, Local, Lemonade, Lecture, Library, Laurels, Lantern.

3. हिंदी–अंग्रेजी व अंग्रजी–हिंदी के दो–दो महत्वपूर्ण कोशों एवं कोशकारों के नाम बताइए। 2

4. निम्नलिखित का रोमन/देवनागरी में लिप्यंतरण कीजिए। 4

कृतघ्न	drought
अस्पताल	Europe
दिल्ली	cyclone
क़यामत	wrist

5. निम्नलिखित प्रश्नों के उतर लगभग 400 शब्दों में दीजिएः **5**x7=35
   - i) 'मशीनी अनुवाद में गुणवत्ता' विषय पर टिप्पणी कीजिए।
   - ii) 'भारतीय भाषाओं के बीच लिप्यंतरण विदेशी भाषाओं के बीच लिप्यंतरण की तुलना में अधिक सहज होता है।' सोदाहरण समझाइए।
   - iii) सृजनात्मक साहित्य के अनुवाद में किन–किन बातों का ध्यान रखे जाने की आवश्यकता है? चर्चा कीजिए।
   - iv) अनुवाद में पुनरीक्षण का क्या महत्व है? समझाइए।
   - v) क्या मूल्यांकन अनुवाद प्रक्रिया का अनिवार्य अंग है? आलोचनात्मक टिप्पणी कीजिए।

6. निम्नलिखित हिन्दी मुहावरों/लोकोक्तियों का अंग्रेजी समतुल्य बताइए : 4
   - i) मुँह में राम बगल में छुरी
   - ii) गज भर की ज़बान होना
   - iii) आँखों में धूल झोंकना
   - iv) एक तो करेला दूजे नीम चढ़ा

7. निम्नलिखित मुहावरों /लोकोक्तियों का हिंदी रूप बताइए। 4

i) Blind person must not run
ii) To make a mess off
iii) Once bitten twice shy
iv) To blow one's own trumpet

8. नीचे के अंग्रेजी पाठ और उसके हिंदी अनुवाद को पढ़िए और अनुवाद का पुनरीक्षण कीजिए। 7

मूल :

IGNOU Serves nearly three million learners which include overseas enrolments and learners form all pasts of the country. The University, in the year 2017, has announced admission for 232 academic programmes perhaps the largest and most diversified pool of academic programmes in the country. The learners are supported by a network of 67 Regional Centres and over 3000 active Learner Support Centres. As a special initiative to bring marginalized and disadvantaged within the fold of education, the University has activated Special Learner Support Centres for the disabled and for jail inmates. Such large edifice of the University is graciously and ably assisted by an estimated 58,000 Academic Counselors empanelled from Academic and Research Institutions of repute across the country. Developing and fine-tuning programs and courses to the requirements and aspirations of Digital Learners is a constant endeavor encouraging the Faculty to innovate, adapt, diversify and expand its academic initiatives.

MHRD key projects, SWAYAM and SWAYAMPRABHA are of seminal significance helping IGNOU to usher in the ambitious Digital Revolution by laying the tarmac for MOOCs, OER and Satellite Communication Apparatus. In addition, there is a wider ramification, that of ossifying and eventually obliterating the 'distance' from the OPEN LEARNING SYSTEM. This will be an epoch-making occurrence, having significant policy implications and much needed course-corrections in the growth profile of OPEN & DIGITAL LEARNING in our country.

हिंदी अनुवाद :

इग्नू में इस समय देश के कोने–कोने से और विदेशों से लगभग 3 मिलियन छात्र नामांकित हैं। वर्ष 2017 में विश्वविद्यालय 232 शैक्षिक कार्यक्रम चला रहा है। उल्लेखनीय है कि यह देश में इतनी विशाल गणना में और विविध प्रकृति के शैक्षिक कार्यक्रम चलाने वाला विश्वविद्यालय है। 67 क्षेत्रीय केंद्रों और तीन हजार से अधिक विद्यार्थी सहायता केंद्रों के जरिए विश्वविद्यालय द्वारा विद्यार्थियों को सहायता–सेवाएँ प्रदान की जाती रहती हैं। समाज के किनारे के और सुविधा–वंचित लोगों को शिक्षा जगत से जोड़ने के विशेष प्रयास के रूप में विश्वविद्यालय ने विकलांगों और कैदियों के लिए विशेष विद्यार्थी सहायता केंद्र खड़े किए हैं। पूरे देश की प्रतिष्ठित शैक्षिक और शोध संस्थाओं के लगभग 58 हजार शैक्षिक परामर्शदाता विश्वविद्यालय से संबद्ध हुए हैं और इससे विश्वविद्यालय का विद्यार्थी सहायता नेटवर्क सतत व्यापक हो रहा है। डिजिटल विद्यार्थियों को जरूरतों और आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए पाठ्यक्रमों को विकसित तथा बेहतर बनाने के निरंतर कोशिश किए जाते हैं। इस प्रकार के उद्यम से विद्यालय संकाय अपनी प्रतिभा के विकास, अनुकूलन एवं बहुमुखीकरण के लिए प्रोत्साहित होता है जिससे विश्वविद्यालय के शैक्षिक प्रयासों का विस्तार होता है।

'स्वयं' और स्वयं प्रभा' मानव संसाधन विकास मंत्रालय की मुख्य योजनाएँ हैं। इग्नू के लिए विशेष तौर पर महत्वपूर्ण हैं। ये परियोजनाएँ मूक्स, ओ.ई.आर. और उपग्रह संचार तंत्र के लिए आधार निर्मित करके इग्नू को महत्वाकांक्षी 'डिजिटल क्रांति' में अग्रणी बनाएँगी। इसके साथ–साथ, ये विद्यालय के आधार को और मजबूती प्रदान करेंगे तथा मुक्त शिक्षा प्रणाली से जटिल एवं महत्वपूर्ण 'दूर' शब्द की भ्रांति को भगाएंगी। देश में मुक्त एवं डिजिटल शिक्षा के विकास के मार्ग में चिर–अपेक्षित सुधारों के कारण इस प्रकार के प्रयासों के महत्वपूर्ण नीति निहितार्थ एवं दूरगामी हल होंगे।

पी.जी.डी.टी–02
अनुवाद का भाषिक और सामाजिक पक्ष
सत्रीय कार्य

कार्यक्रम कोड : पी.जी.डी.टी.
पाठ्यक्रम कोड : पीजीडीटी–02
सत्रीय कार्य कोडःपीजीडीटी–02/एएसटी–01(टीएमए)/2018

अधिकतम अंक : 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

---

1. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लगभग 400 शब्दों में दीजिए। 8x7=56

i) भाषा किसे कहते हैं? भाषा की विभिन्न इकाइयों का विवेचन कीजिए।

ii) सामान्य और तकनीकी शब्दों में अंतर स्पष्ट कीजिए और पारिभाषिक शब्दावली संबंधी विभिन्न विचारधाराओं की सोदाहरण चर्चा कीजिए।

iii) बहुभाषिक समाज से क्या तात्पर्य है? बहुभाषिक समाज में अनुवाद के विभिन्न क्षेत्रों पर प्रकाश डालिए।

iv) अनुवाद के माध्यम से भाषा विकास के विभिन्न आयामों का विवेचन कीजिए।

v) भारतीय साहित्य की अवधारणा और इसके अध्ययन में अनुवाद की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

vi) 'दूर शिक्षा में अनुवाद' पर एक निबंध लिखिए।

vii) 'राजभाषा' का अर्थ स्पष्ट कीजिए और प्रशासनिक कार्यों में अनुवाद की आवश्यकता का विवेचन कीजिए।

2. निम्नलिखित में से प्रत्येक उपसर्ग का प्रयोग करते हुए चार–चार शब्द बनाइए : 3

अध–, आ–, उ–, बद–, ला–, भर–

3. निम्नलिखित में से प्रत्येक प्रत्यय का प्रयोग करते हुए चार–चार शब्द बनाइए : 3

–ग्रस्त, –कर, –हीन, –ई, –वान, –प्रद

4. निम्नलिखित शब्दों को मानक रूप में लिखिए : 3

मट्ठा, ब्रम्ह, चिन्ह, अङक, वांग्मय, सिद्धांत

5. निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों के हिंदी/अंग्रेजी पर्याय लिखिएः 7

क) मुद्रा विनिमय, रोजगार सूचना, प्रतिपुष्टि, निर्गम रजिस्टर, डाक प्रमाणपत्र, अनारक्षित रिक्ति, तारांकित प्रश्न

ख) deficit budget, fortnightly report, half pay leave, national economy, sample survey, verbal discussion, wholetime employee

6. निम्नलिखित प्रश्न पत्र का हिंदी में अनुवाद कीजिए : 8

DISASTER MANAGEMENT

Answer any five of the following questions in about 400 words :

1. Distinguish between Drought and Famine and explain different drought mitigation strategies.
2. Discuss the concept, significance and styles of leadership in disaster situations.
3. Describe the major approaches for creating public awareness for effective disaster management.
4. Each type of natural disaster has its own cause. Elaborate.
5. Discuss the meaning and concept of planning and differentiate between short-term and long-term planning for disaster management.
6. Describe the concept of human behavior and response and highlight the factors inhibiting positive human behavior in disaster situations.
7. Explain the role and importance of International Agencies in disaster mitigation.
8. Define Epidemic and enlight its major types.
9. Bring out the methods of information collection for disaster management.

7. निम्नलिखित सामग्री का हिंदी में अनुवाद कीजिए : 10

Leadership development has now become the top priority for HR (human resource) prosessionals with emphasis on leadership as a core capability of all employees across sectors. This new trend has replaced engagement, according to a survey conducted by the Top Employers Institute globally.

There is also a shift towards individuals being responsible for their own development needs. This leads to customized leadership development programmes. Many high-growth organizations in India have a relatively large proportion of millennials (सहस्राब्दि) in leadership positions. They drive the change in leadership development methods as they prefer to use innovative means for personal development over traditional methods such as formal workshops, training courses and development assignments, in line with the global trend of developing leadership skills individually.

With companies becoming less hierarchical, it is noticeable that they are starting to identity future leaders not by job title or position but by influence and performance. And those future leaders are beginning to get the opportunity to gain broader life and commercial skills. This broader approach to self-development is important as ownership for personal development rapidly shifts to the individual.

With individual ownership also comes the need for a different mindset. Some of the top employers offer training around resilience (लचीलापन / समुत्थान शक्ति) and mindfulness to help employees make this transition. Intrinsically linked to this mindset is an understanding of wellbeing and a balance between food, rest and exercise, and companies need to encourage this within all employees. We need to make sure that the next generation of leaders do not reach 'burn out'. As most now operate in an always online, always connected business environment the need to alleviate both stress and the pressure of always being 'present' should be very much a part of self development, the report says.

The Leadership Development report is based on the findings of the top employers HR Best Practices Survey that surveyed 600 certified organizations in 99 countries and included a sample size of 3,000 employees.

8. निम्नलिखित सामग्री का अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए : 10

कहीं पर भी सामान्य से ज्यादा बारिश हो जाए तो लोगों को समस्याओं का सामना करना ही पड़ता है, लेकिन ये समस्याएँ तब गंभीर संकट का रूप ले लेती हैं जब नियोजित विकास की अनदेखी के कारण बरसाती पानी की निकासी के उपयुक्त उपाय न किए गए हों। मुंबई में एक बार फिर बारिश का कहर देखने को मिल रहा है तो इस पर हैरत नहीं। मंगलवार को कहीं अधिक बारिश के कारण समुद्र तट पर बसी मुंबई जिस तरह पानी–पानी हुई और सड़क, रेल एवं वायु यातायात ठप्प होने से लाखों लोग परेशान हुए उससे फिर से यह स्पष्ट हो रहा है कि हमारे प्रमुख शहरों का ढाँचा किस तरह चरमराता जा रहा है। मुंबई की दयनीय दशा 2005 की याद दिला रही है जब इसी तरह भारी बारिश के कारण सब कुछ अस्त–व्यस्त हो गया। 2005 की तबाही के बाद शहरीकरण के ढाँचे के साथ सब कुछ दुरुस्त करने के साथ ही मुंबई को शंघाई बनाने तक के वायदे किए गए थे, लेकिन ताजा हालात बता रहे हैं कि पिछले 12 सालों में आपदा तंत्र को सक्षम बनाने और सतर्कता के स्तर को बढ़ाने के अलावा और कुछ खास नहीं किया जा सका। मुंबई में न केवल पहले की तरह झुग्गी–बस्तियाँ कायम हैं, बल्कि वे बढ़ती भी दिख रही हैं। इसी तरह अतिक्रमण और बेतरतीब विकास के जनक भू–माफिया भी पहले की तरह सक्रिय हैं।

मुंबई में जल निकासी तंत्र की किस तरह अनदेखी हुई है, इसका प्रमाण यह है कि शहर के बीच से बहने वाली मीठी नदी नाला बनकर रह गई है। ऐसी ही कुछ और नदियाँ कचरे और अतिक्रमण के कारण करीब–करीब खत्म होने की कगार पर हैं। आखिर जब ये नदियाँ नष्ट की जा रही थीं तब मुंबई के नीति–नियंता क्या कर रहे थे? निःसंदेह बात केवल मुंबई की ही नहीं, अन्य महानगरों और शहरों की भी है। यह देश को जानबूझकर संकट की ओर ले जाने के अतिरिक्त और कुछ नहीं कि जब छोटे–बड़े शहर आबादी के बढ़ते बोझ से दो–चार हैं तब वे अनियोजित विकास से भी जूझ रहे हैं। सभी जान रहे हैं कि जल्द ही देश की कुल आबादी का करीब आधा हिस्सा शहरों में गुजर–बसर कर रहा होगा, लेकिन इससे संबंधित चुनौतियों का सामना करने में नगर निकायों से लेकर राज्य सरकारें तक उदासीन नजर आती हैं। इसी कारण स्मार्ट सिटी बनाने के इस दौर में सामान्य बारिश होते ही हमारे शहर हर तरह की अव्यवस्था से घिर जाते हैं। क्या यह किसी से छिपा है कि देश के तमाम इलाके दशकों से बाढ़ से दो–चार हो रहे हैं, लेकिन उससे निपटने के ठोस उपाय कहीं नज़र नहीं आते?

पी.जी.डी.टी–03
व्यावहारिक अनुवाद के विविध स्तर और क्षेत्र
सत्रीय कार्य

कार्यक्रम कोड : पी.जी.डी.टी.
पाठ्यक्रम कोड : पीजीडीटी–03
सत्रीय कार्य कोडः पीजीडीटी–03/एएसटी–01(टीएमए)/2018

अधिकतम अंक : 100 अंक

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. आशु अनुवाद के स्वरूप पर विचार करते हुए इसके विविध पक्षों की चर्चा कीजिए। 10

2. निम्नलिखित का हिंदी में अनुवाद कीजिए। 10

i) Translation is not merely a linguistic transfer but a cultural process.

ii) Under the pressure of second wave feminism, many Western governments passed sex-equality laws in the 1970s.

iii) The programme provides students the perfect opportunity to pursue their research interests within their area of specialization.

iv) The strong focus envisaged on position affirmative action would be of considerable significance.

v) The journal aims at providing a forum to researchers across the world for debate on various issues.

vi) This programme is designed to provide the knowledge and skills needed to work as a laboratory technician in a science library.

vii) Nirmal Verma translated several literary works from Czech into Hindi during his stay in Prague in the 1960s.

viii) The unit reaches out to the prospective students by providing information about academic programme of the university, its instructional system, admission procedure etc.

ix) It was only after independence, when the nation had acquired political sovereignity, that the gender issue began to be addressed with a practical rather than an ideological approach.

x) At that time, it became legitimate to demand reform in the form of legislation about marriage rules, property rights, and equality of opportunity.

3. **निम्नलिखित का अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए :** 10

1. भारीर के विभिन्न भागों में रक्त की मात्रा अलग–अलग होती है जो जरूरत के अनुसार समय–समय पर बदलती रहती है।

2. संसार में नए ज्ञान–विज्ञान, आविष्कार–व्यापारिक संपर्क के कारण मनुष्य नए शब्दों को गढ़ता है।

3. आधुनिक मधुमक्खी पालन के बारे में शिक्षा प्रदान करना और मधुमक्खी पालन के क्षेत्र में मानव संसाधन तैयार करना इस कार्यक्रम का उद्देश्य है।

4. वाक्य में प्रयुक्त किसी शब्द का उन अर्थो में से कौन–सा अर्थ लिया जाए, यह अनुवाद कला का सबसे महत्वपूर्ण अंग है।

5. बाल–श्रम का मतलब ऐसे कार्य से है जिसमें कि कार्य करने वाला व्यक्ति कानून द्वारा निर्धारित आयु सीमा से छोटा होता है।

6. जैसे ही बाहर आई तो देखा कि पत्रकारों का बडा–सा झुंड श्री नारायण मिश्रा को चारों ओर से घेरे हुए है।

7. शिवमूर्ति की कहानियों का जितना साहित्यिक महत्व है, उतना ही समाजशास्त्रीय भी।

8. हिंदी के विराट आकाश में जैनेंद्र कुमार का रचनात्मक आलोक तेजपुंज के रूप में प्रतिष्ठित हो चुका है।

9. एक गूढ़ अर्थ में उनका साहित्य व्यक्ति व समाज की नई नैतिकता का उपनिषद है।

10. कोई भी कृति सबसे पहले और सबके अंत में भाषा में ही रहती है।

4. निम्नलिखित का हिंदी में अनुवाद कीजिए। 10x4=40

a) Columbus led his three ships – the *Nina*, the *Pinta* and the *Santa Maria* – out of the Spanish port of Palos on August 3, 1492. His objective was to sail west until he reached Asia (the Indies) where the riches of gold, pearls and spice awaited. His first stop was the Canary Islands where the lack of wind left his expedition becalmed until September 6.

Once underway, Columbus benefited from calm seas and steady winds that pushed him steadily westward (Columbus had discovered the southern “Trades” that in the future would fuel the sailing ships carrying goods to the New World). However, the trip was long, longer than anticipated by either Columbus or his crew. In order to mollify his crew’s apprehensions, Columbus kept two sets of logs: one showing the true distance traveled each day and one showing a lesser distance. The first log was kept secret. The latter log quieted the crew’s anxiety by under-reporting the true distance they had traveled from their homeland.

This deception had only a temporary effect; by October 10 the crew’s apprehension had increased to the point of near mutiny. Columbus headed off disaster by promising his crew that if land was not sighted in two days, they would return home. The next day land was discovered.

b) The revival of the Olympic Games in 1896, unlike the original Games, has a clear, concise history. Pierre de Coubertin (1863–1937), a young French nobleman, felt that he could institute an educational program in France that approximated the ancient Greek notion of a balanced development of mind and body. The Greeks themselves had tried to revive the Olympics by holding local athletic games in Athens during the 1800s, but without lasting success. It was Baron de Coubertin's determination and organizational genius, however that gave impetus to the modern Olympic movement. In 1892 he addressed a meeting of the Union des Sports AthlÃ©tiques in Paris. Despite meager response he persisted, and an international sports congress eventually convened on June 16, 1894. With delegates from Belgium, England, France, Greece, Italy, Russia, Spain, Sweden, and the United States in attendance, he advocated the revival of the Olympic Games. He found ready and unanimous support from the nine countries. De Coubertin had initially planned to hold the Olympic Games in France, but the representatives convinced him that Greece was the appropriate country to host the first modern Olympics. The council did agree that the Olympics would move every four years to other great cities of the world.

c) The first substantial computer was the giant ENIAC machine by John W. Mauchly and J. Presper Eckert at the University of Pennsylvania. ENIAC (Electrical Numerical Integrator and Calculator) used a word of 10 decimal digits instead of binary ones like previous automated calculators/computers. ENIAC was also the first machine to use more than 2,000 vacuum tubes, using nearly 18,000 vacuum tubes. Storage of all those vacuum tubes and the machinery required to keep the cool took up over 167 square meters (1800 square feet) of floor space. Nonetheless, it had punched-card input and output and arithmetically had 1 multiplier, 1 divider-square rooter, and 20 adders employing decimal "ring counters," which served as adders and also as quick-access (0.0002 seconds) read-write register storage. The executable instructions composing a program were embodied in the separate units of ENIAC, which were plugged together to form a route through the machine for the flow of computations. These connections had to be redone for each different problem, together with presetting function tables and switches. This "wire-your-own" instruction technique was inconvenient, and only with some license could ENIAC be considered programmable; it was, however, efficient in handling the particular programs for which it had been designed. ENIAC is generally acknowledged to be the first successful high-speed electronic digital computer (EDC) and was productively used from 1946 to 1955.

d) India is home to one of the largest film industries in the world. Every year thousands of movies are produced in India. Indian film industry comprises of Hindi films, regional movies and art cinema. The Indian film industry is supported mainly by a vast film-going Indian public, though Indian films have been gaining increasing popularity in the rest of the world, especially in countries with large numbers of emigrant Indians.

India is a large country where many languages are spoken. Many of the larger languages support their own film industry. Some of the popular regional film industries in India are Bengali, Tamil, Telugu, Kannada, Malayalam and Punjabi. The Hindi/Urdu film industry, based in Mumbai, formerly Bombay, is called Bollywood. Similar neologisms have been coined for the Tamil film industry Tollywood and the Telugu film industry. Tollygunge is metonym for the Bengali film industry, long centered in the Tollygunge district of Kolkata. The Bengali language industry is notable as having nurtured the director Satyajit Ray, an internationally renowned filmmaker and a winner of many awards.

The Bollywood industry is the largest in terms of films produced and box office receipts, just as Urdu/Hindi speakers outnumber speakers of other Indian languages. Many workers in other regional industries, once established, generally move to Bollywood for greater spotlight or opportunity.

5. निम्नलिखित का अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए। 10x3=30

(क) पश्चिमी विचार–जगत में एक दार्शनिक गतिविधि के तौर पर 'सौंदर्यशास्त्र' की पृथक संकल्पना अट्ठारहवीं सदी में तब उभरी जब कला–कृतियों का अनुशीलन हस्त–शिल्प से अलग करके किया जाने लगा। इसका नतीजा सिद्धांतकारों द्वारा 'ललित कला' की अवधारणा के सूत्रीकरण में निकला। अलेक्सांदेर गोत्तलीब बॉमगारतेन ने 1750 में 'एस्थेटिका' लिखकर एक बहस का सूत्रपात किया। इसके सात साल बाद डेविड ह्यूम द्वारा 'ऑफ द स्टैंडर्ड ऑफ टेस्ट' लिखकर सौंदर्यशास्त्र के उभरते हुए विमर्श को प्रश्नांकित किया गया।

आधुनिक यूरोपीय सौंदर्यशास्त्रीय विमर्श की वास्तविक शुरुआत इमैनुएल कांट की 1790 में प्रकाशित रचना 'क्रिटीक ऑफ जजमेंट' से हुई। अपनी इस कृति में कांट ने सौंदर्यशास्त्रीय आकलन की कसौटियों को सार्वभौम बनाने पर जोर दिया। लेकिन, दूसरी ओर, वे किसी भी तरह के सार्वभौम सौंदर्यशास्त्र की संभावना पर संदेह करते हुए भी नजर आए। इस विरोधाभास के बावजूद कांट की उपलब्धि यह रही कि उन्होंने कला और सौंदर्य की विवेचना के लिए कुछ अनिवार्य द्विभाजनों को स्थापित कर दिया। इन द्विभाजनों में सर्वाधिक उल्लेखनीय हैं; इंद्रियबोध और तर्क–बुद्धि, सारवस्तु और रूप, अभिव्यक्ति और अभिव्यक्त, आनंद और उपसंहार, स्वतंत्रता और आवश्यकता आदि। कांट की दूसरी उपलब्धि यह थी कि उन्होंने सौंदर्यशास्त्रीय अनुभव और ऐंद्रिक अनुभव के बीच अंतर स्थापित किया। उनका कहना था कि सौंदर्यशास्त्रीय व्याख्या और उसकी निष्पत्ति विश्लेषण के लक्ष्य के प्रति बिना किसी व्यावहारिक आसक्ति के ही की जानी चाहिए।

(ख) इतिहास का क्षेत्र बड़ा व्यापक है। प्रत्येक व्यक्ति, विषय, अन्वेषण आंदोलन आदि का इतिहास होता है, यहाँ तक कि इतिहास का भी इतिहास होता है। अतएव यह कहा जा सकता है कि दार्शनिक, वैज्ञानिक आदि अन्य दृष्टिकोणों की तरह ऐतिहासिक दृष्टिकोण की अपनी निजी विशेषता है। वह एक विचार–शैली है जो प्रारंभिक पुरातन काल से और विशेष तौर पर 17वीं सदी से सभ्य संसार में व्याप्त हो गई। 19वीं सदी से प्रायः प्रत्येक विषय के अध्ययन के लिए उसके विकास का ऐतिहासिक ज्ञान आवश्यक समझा जाता है। इतिहास के अध्ययन से मानव समाज के विविध क्षेत्रों का जो व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त होता है उससे मनुष्य की परिस्थितियों को आँकने, व्यक्तियों के भावों और विचारों तथा जनसमूह की प्रवृत्तियों आदि को समझने के लिए बड़ी सुविधा और अच्छी खासी कसौटी मिल जाती है।

इतिहास प्रायः नगरों, प्रांतों तथा विशेष देशों या फिर युगों के लिखे जाते हैं। अब इस ओर चेष्टा और प्रयत्न होने लगे हैं कि यदि संभव हो तो सभ्य संसार ही नहीं, वरन् मनुष्य मात्र के सामूहिक विकास या विनाश का अध्ययन भूगोल के समान किया जाए। इस ध्येय की सिद्धि हालाँकि असंभव तो नहीं, किंतु बड़ी अवश्य है। इसके प्राथमिक मानचित्र से यह अनुमान होता है कि विश्व के संतोषजनक इतिहास के लिए बहुत लंबे समय, प्रयास और संगठन की आवश्यकता है। कुछ विद्वानों का मत है कि यदि विश्व इतिहास की तथा मानुषिक प्रवृत्तियों के अध्ययन से कुछ सर्वव्यापी सिद्धांत निकालने की चेष्टा की गई

तो इतिहास समाजशास्त्र में बदलकर अपनी वैयक्तिक विशेषता खो बैठेगा। यह भय इतना चिंताजनक नहीं है, क्योंकि समाजशास्त्र के लिए इतिहास की उतनी ही आवश्यकता है जितनी इतिहास को समाजशास्त्र की। वस्तुतः इतिहास पर ही समाजशास्त्र की रचना संभव है।

(ग) विश्व स्वास्थ्य संगठन (World Health Organization - WHO) विश्व के देशों के स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं पर आपसी सहयोग एवं मानक विकसित करने की एक महत्त्वपूर्ण संस्था है। इस संस्था की स्थापना 7 अप्रैल, 1948 को की गयी थी। यह संयुक्त राष्ट्र संघ की एक अनुषांगिक इकाई है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के 193 सदस्य देश तथा दो संबद्ध सदस्य हैं। इसका उद्देश्य संसार के लोगों के स्वास्थ्य का स्तर ऊँचा करना है। डब्ल्यू.एच.ओ. का मुख्यालय स्विटज़रलैंड के जेनेवा शहर में स्थित है। भारत भी विश्व स्वास्थ्य संगठन का एक सदस्य देश है और इसका भारतीय मुख्यालय राजधानी दिल्ली में स्थित है।

डब्ल्यू.एच.ओ. के संविधान को 22 जुलाई, 1946 को स्वीकार किया गया और यह 7 अप्रैल, 1948 से लागू हो गया। 15 नवंबर, 1947को विश्व स्वास्थ्य संगठन संयुक्त राष्ट्र का विशिष्ट अभिकरण बन गया। डब्ल्यू.एच.ओ. द्वारा जन–स्वास्थ्य के अंतरराष्ट्रीय कार्यालय के कार्यों तथा संयुक्त राष्ट्र राहत एवं पुनर्वास प्रशासन (यू.एन.आर.आर.ए) की गतिविधियों को भी हाथ में ले लिया गया। 194 सदस्यों वाले विश्व स्वास्थ्य संगठन का मुख्यालय जेनेवा में स्थित है।

डब्ल्यू.एच.ओ. का लक्ष्य सभी लोगों के लिए स्वास्थ्य के उच्चतम संभव स्तर की प्राप्ति में सहायता प्रदान करना है। विश्व स्वास्थ्य संगठन को सर्वाधिक सफल संयुक्त राष्ट्र अभिकरणों में से एक माना जाता है। यह अंतरिम स्वास्थ्य कार्यों से सम्बंधित समन्वयकारी प्राधिकरण के रूप में कार्य करता है तथा स्वास्थ्य मामलों में सक्रिय सहयोग को प्रोत्साहित करता है। इसके कार्यक्रमों में स्वास्थ्य सेवाओं का विकास, रोग निवारण व नियंत्रण, पर्यावरणीय स्वास्थ्य का संवर्द्धन, स्वस्थ मानव शक्ति विकास तथा जैव–चिकित्सा, स्वास्थ्य सेवाओं, शोध व स्वास्थ्य कार्यक्रमों का विकास एवं प्रोत्साहन शामिल है। डब्ल्यू.एच.ओ. सदस्य देशों को उन स्वास्थ्य सेवाओं के विकास में सहयोग प्रदान करता है, जिनका लक्ष्य सभी के लिए स्वास्थ्य देखभाल सुनिश्चित करना, मातृ एवं बाल स्वास्थ्य को सवंर्धित करना, परिवार नियोजन, पोषण, स्वास्थ्य शिक्षा एवं स्वास्थ्य, स्वच्छ जलापूर्ति तथा सफाई व्यवस्था, संक्रामक रोगों की रोकथाम, दवाओं व टीकों का उत्पादन व गुणवत्ता नियंत्रण तथा शोध प्रोत्साहन इत्यादि होता है। संगठन स्वास्थ्य आँकड़ों के संग्रहण, विश्लेषण एवं वितरण में भी सहयोग करता है तथा रोग लक्षणों, बीमारियों व उपचारों के संबंध में तुलनात्मक अध्ययनों को प्रायोजित करता है।

पी.जी.डी.टी–04
प्रशासनिक अनुवाद
सत्रीय कार्य

कार्यक्रम कोड : पी.जी.डी.टी.
पाठ्यक्रम कोड : पीजीडीटी–04
सत्रीय कार्य कोडः पीजीडीटी–04/एएसटी–01(टीएमए)/2018

अधिकतम अंक : 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. सृजनात्मक और तकनीकी साहित्य से क्या अभिप्राय है? सृजनात्मक साहित्य के अनुवाद और तकनीकी अनुवाद की तुलना कीजिए। 10

2. निम्नलिखित शब्दों के हिंदी पर्याय बताइए : 10

appellate power, basic training, conveyance allowance, discretionary power, errors & omissions, forensic science, grievance procedure, house building allowance, industrial relations, joint stock company, labour intensive industry, manpower forecasting, notified commodity, oath taking ceremony, performance evaluation, remuneration, sanctioned budget, temporary arrangement, utilization certificate, valedictory session.

3. निम्नलिखित अभिव्यक्तियों के हिंदी पर्याय बताइए : 10

i. after adequate consideration
ii. bills for signature, please
iii. case has been closed
iv. forwarded and recommended
v. letter of acknowledgement
vi. it has been noticed that
vii. please put up with previous papers
viii. should be given top priority
ix. this may please be approved
x. you are hereby informed that

4. निम्नलिखित का हिंदी में अनुवाद कीजिएः 10x4=40

a) Computers are capable doing extremely complicated work in all branches of learning. They can solve the most complex mathematical problems or put thousand unrelated data in order. These machines can be put to varied uses. For instance, they can provide information on the best way to prevent traffic accidents. They work accurately and at high speed. They save research workers years of hard work. This whole process by which machines can be used to work for us has been called 'Automation'. In future, automation may enable human beings to enjoy more leisure than they do today. The coming of automation is bound to have important social consequences.

Some years ago, an expert on automation, Sir Leon Bagrit pointed out that it was a mistake to believe that these machines could think. There is no possibility that human beings will be controlled by machines. Though computers are capable of learning from their mistakes and improving on their performances, they need detailed instructions from human beings to be able to operate. They can never lead independent lives or rule the world by taking decisions of their own.

Sir Leon said that, in future, computers would be developed which would be small enough to be carried in one's pocket. Ordinary people would then be able to use them to obtain valuable information. Computers could be plugged into a wireless network and can be used like radios. For instance people, going on holiday, could be informed about weather conditions. Car drivers can be given an alternative route, when there is a traffic jam. It will also be possible to make tiny translating machines. This will enable people who do not share a common language to talk to each other without any difficulty or to read foreign publications.

It is impossible to assess the importance of a machine of this sort, for many international misunderstandings are caused simply due to our failure to understand each other. Computers will also be used in ordinary public hospitals. By providing a machine with a patient's systems, a doctor will be able to diagnose the nature of his illness. Similarly machines could be used to keep a check on a patient's health record and bring it up to date.

b) Emerging from a 24 square-foot laboratory at University of Calcutta were ideas, tools and pioneering works in wireless waves that later helped Guglielmo Marconi invent the radio. And the genius behind these inventions was Jagadish Chandra Bose, who was in 2009 honoured as one of the fathers of radio science, a due he received only during his 150th birth anniversary.

J.C. Bose was a polymath which two major works came from two distinct field of science electro-magnetism and plant physiology. He was considered the first 'modern' and experimental scientists of India.

He was born in 1858 in Bengal Presidency under the British Rule. Bose graduated from St. Xavier College, Calcutta, and went on to do medicine from the University of London. But he could not pursue it due to ill-health. So, he joined Cambridge University to do Natural Science Cambridge and returned to India in 1885. He found himself a job at the Presidency College, Calcutta, on a temporary basis, where he was subjected to racial discrimination. Later he was made permanent and was given a 'dingy' laboratory to conduct his experiments in. Remember, it was the times when India was ruled by a colonial British, which did not encourage original research by Indians.

Only a poor workman blames his tools. Working from here day and night, Bose followed up on German physicist Heinrich Hertz's discovery of electro-magnetic waves. Bose came up with a remarkable creation: the Millimetre Waves, the shortest radio-waves of 5mm. in 1895, Bose demonstrated to public in Calcutta the wireless transmission of electro-magnetic waves.

News about his pioneering work reached far and wide. The world started taking notice of this modern scientist from India. In 1899, Bose came up with another development – 'the iron-mercury-iron coherer' and presented at the Royal Society, London, Years later Marconi transmitted radio waves across the Atlantic, using Bose's coherer. Bose also has the distinction of using a semiconductor junction to detect radio waves for the first time. He invented various now common place microwave components. The world of science celebrated him as a visionary, who was considered as 50 years ahead of time.

From electro-magnetic waves, Jagdish Chandra Bose's attention turned to plant biology. In 1901, he showed that plants are also sensitive to light and temperature. Bose demonstrated using his crescograph how poison could create human-like suffering in plants. He had a plant dipped up to its stem in a vessel holding a poisonous bromide solution. When plugged to the instrument, people could view how the lighted spot on a screen showing the moments of the plant, beat, vibrated and stopped, corresponding to the plant's suffering and death.

Bose founded a research institute – Bose institute in Calcutta in 1931. The same year, he was knighted by the British government. He died in 1937.

c) INDEMNITY BOND FOR RELAESE OF INITIAL ADVANCE PAYMENT
(In case of Advance Payment to Govt. Deptt./PSU's wherever applicable)

INDEMNITY BOND

(To be executed by the contractor on non-judicial stamp paper of appropriate value)

No._____ Dated_____

THIS INDEMNITY BOND is made this _____ day of _____2017___ by _____ (Contractor's name) _____, a Company registered under the Companies Act, 1956, having its Registered/Head Office at _____ (hereinafter called the "Contractor", which expression shall include its successors and permitted assigns) in favour of the National Hydroelectric Power Corporation Ltd., a company incorporated under the companies Act, 1956, having its registered Office at Sector 33, Faridabad – 1210003 (Haryana)

_____ (hereinafter called the "Employer", which expression shall include its successors and assigns).

WHEREAS the employer has awarded the Contract for _____ vide its Purchase Order/Letter of Award/Contract No. _____ dated _____ (hereinafter called the "Contract") to the Contractor, in terms of which the Employer is required to release initial Advance payment to the Contractor for successful execution of the Contract.

AND WHEREAS by virtue of Clause No. ____ of the said contract, the Contractor is required to execute in Indemnity Bond in favour of the Employer for the initial Advance payment to be released by the Employer for the purpose of successful performance of the Contract (hereinafter called the "Advance").

NOW, THEREFORE, this indemnity Bond witnesseth as follows:

1. That in consideration of the Advance of Rs._____ (Rupees_____ only), against the total Contract Price of Rs. _____ (Rupees _____ only), being released to the Contractor for the purpose of successful performance of the Contract, the Contractor hereby undertakes to indemnify and keep the Employer indemnified, for the Advance.

2. That the contractor is obliged and shall remain absolutely responsible and takes all risks whatsoever, till supplies are effected, in accordance with the terms and conditions of the Contract and its receipt and acceptance by the Employer at its Project.

3. That the Contractor undertakes that the Advance shall be used exclusively for the successful performance/execution of the Contract, strictly in accordance with the terms and conditions and no part of the advance shall be utilized for any other work or purpose whatsoever. It is clearly understood by the Contractor that non-observance of the obligations under this Indemnity Bond by the Contractor shall interalia constitute a criminal breach of trust on the part of the Contractor for all intents and purposes, including legal/penal consequences.

IN WITNESS WHEREOF, the Contractor has hereunto set its hand through its authorized representative under the common seal of the Company on the day, month and year first above mentioned.

In presence of:

WITNESSES

1. Signature: _____

Name: _____

Complete Postal Address: _____

_____

_____

2. Signature: _____

Name: _____

Complete Postal Address: _____

_____

_____

For & on behalf of: _____

Signature: _____

Name: _____

Designation: _____

(of the authorized representative of the Contractor)

Official Seal of the Company: _____

Notary Public

Signature: _____

Name: _____

Date: _____

Official Seal: _____

d) **JAWAHARLAL INSTITUTE OF POST GRADUATE MEDICAL EDUCATION & RESEARCH (JIPMER)**

(Institution of National Importance under Ministry of Health & Family Welfare, Govt. of India)
Dhanvantri Nagar, Puducherry – 605 006

E-TENDER NOTICE

(Electronic Tendering Mode only)

Director, JIPMER Pondicherry invites Tenders for supply of TABLETS, CAPSULES, INHALERS, OPHTHALMIC, ENT AND EXTERNAL USE PREPARATIONS, INJECTIONS, DISINFECTING FLUIDS AND SURGICAL DRESSINGS to JIP…. hospital for the period from July 2016 to July 2017.

The participation of the firms is restricted to:

1. Original Manufacturers of Drugs or original importers of Drugs.
2. Firms having an annual turnover of above 10 crore rupees are eligible to quote.
3 The Companies/Firms which have been blacklisted by any State Government/Central Government/its Drug procurement agencies due to quality failure of the drugs supplied should not participate in the tender.
4 THE COMPANIES HAVING ANY KIND OF DUES INCLUDING RISK PURCHASE WITH JIPMER ARE NOT ELIGIBLE TO PARTICIPATE IN THE TENDER 2016-17.

Parties regularly maintaining the sufficient quantity and ready to supply the drugs should only quote. Rate quoted should be on door-delivery basis at First Floor Pharmacy Block, JIPMER HOSPITAL. Orders will be placed with selected tender part. The firms who have enrolled their rates with DGS&D rate contract may please send a copy to this office.

The documents are available on website – www.tenderwizard.com/JIPMER. Interested vendors may register in the e-Tender portal and obtain the USER ID and Password – 560 001. The Registration Charges Rs. 500/- is to be paid by DD in favour of K.S.E.D.C. Ltd, payable at Bangalore if not registered already.

The tender forms will be electronically issued to vendors only on submission of e-receipt and documents as mentioned below by.

The Officer-in-charge, Puchase Section, JIPMER, Poduchery – 605006.

e-Payment Details:-

i) Tender Fee Rs. 210/- and EMD – Rs. 30,000/- to remit through SBI Collect which is available in our website www.jipmer.edu.in and select Tender Fee remit link. From the list of category please select Tender Fee/EMD category for payment confirmation/e-receipt duly rubber stamped, self attested to be submitted to this office.

The Following Documents are required to the submitted along with counterfoils of original challans:

i) Registration form & Tender Document duly filled and signed (copy available in our website www.jipmer.edu.in).
ii) Copy of last three years audited balance sheet and IT return showing annual turnover.
iii) Copy of Sale tax/VAT Registration and PAN.
iv) Copy of Drug Manufacturing License or Import License.

The participating companies should submit an affidavit duly attested by a Notary Public stating that the company is NOT BLACKLISTED by any state/Central Government procurement agencies like MSO, TNMSC, RSMS, WBMSC etc.

DD/CASH/CHEQUE/POSTAL ORDERS/TELEGRAPHIC MONEY ORDER WILL NOT BE ACCEPTED and the tender cost should not be included with EMD. Tender documents/Tender Fee/EMD category for payment confirmation/e-receipt duly rubber stamped, self attested should be submitted to Purchase Section, JIPMER on or before 20.05.2016 up to 1 p.m.

Tender should be submitted online in prescribed form. Last date of submission of tender at e-Tender site is; 26.05.2016 upto 12.00 Noon. The e-tenders will be opened on 26.05.2016 at 2.30 p.m. In case 26.05.2016 happens to be a holiday for unexpected reasons, the tender will be opened on the aftermoon next working day.

For assistance in e-Tendering, vendors may please contact the service provider M/s. KEONICS on Ph: 080-4048 2000 / Mob : 9865370307, 9952787829 E-mail : etendershelpdesk@gmail.com
Pre Tender Meeting will be conducted on 12.05.2016 at 2.30 PM at JIPMER

OFFICER INCHARGE (PURCHAGE)

5. निम्नलिखित सामग्री का अंग्रेजी में अनुवाद कीजिए : 10x3=30

क) वर्चुअल दुनिया में 'ब्लू व्हेल गेम' या 'ब्लू चैलेंज' रूस से शुरू होकर ब्राजील, चीन, इटली, अर्जेंटीना, स्पेन, वेनेजुएला, जार्जिया आदि यूरोपीय देशों में पहुँचा, फिर भारत में। केरल, मुंबई, इंदौर और बंगाल में जब इस खेल के दुष्परिणाम सामने आए तो सरकार चौकन्नी हो गई और तमाम सोशल साइटों से इसे हटाने का निर्देश जारी कर दिया। हिंसक वीडियो गेम का एक बड़ा कारोबार ऑनलाइन और ऑफलाइन फैला पड़ा है, जिसे समझने की चुनौतियाँ हमारे सामने हैं।

'ब्लू व्हेल गेम' का मनोविज्ञान हिंसक वीडियो गेम से अलग है। इसे मनोवैज्ञानिक अध्ययनों और प्रयोगों से समझने की कोशिश की जा सकती है। यह गेम टास्क या चुनौतियों को स्वीकार करने का समुच्चय है, जिसे पचास दिनों तक एक समझौते के तहत एडमिनिस्ट्रेटर और खिलाड़ी के बीच खेला जाता है। वर्चुअल दुनिया से जुड़े बच्चों की जिंदगी में यह आक्रांता की तरह प्रवेश करता है। इसके साम्राज्यवादी–आतताई स्वरूप पर समाजविज्ञानियों, चिंतकों, मनोचिकित्सकों, अर्थशास्त्रियों आदि ने पहले ही काफी विचार किया है। वे खुदकुशी के इस खेल को लेकर आश्चर्यचकित हैं। अब तक करीब तीन सौ जिंदगियाँ निगल चुके इस खेल के रहस्य को समझना बाकी है। जाँच से सिर्फ इतना अनुमान लगाया गया है कि इसमें फंसने वाले ज्यादातर बच्चे या तो अपनी जिंदगी से निराश या फिर अकेलेपन का शिकार हैं।

रूस के मनोविज्ञान के छात्र फिलिप बुडकिन ने चार साल पहले इस खेल को बनाया था। तब उसने सोचा भी नहीं होगा कि बारह साल से अठारह साल के बच्चों को वह इस कदर अपने जाल में उलझा देगा कि मौत का मंजर पसरने लगेगा।

एडमिनिस्ट्रेटर के आमंत्रण से आप शुरू करते हैं, तब तक वह आपके बारे में काफी जानकारियां इकट्ठा कर लेता है और आपकी गतिविधियों पर निगाहें रखता है। फिर अपने रचे व्यूह में फंसाता है। वह तरह–तरह से चुनौतियाँ देता है। वह धीरे–धीरे इतना मनोवैज्ञानिक दबाव बनाता चला जाता है कि आप एक 'रोबोट' बन कर रह जाते हैं। वह जैसा चाहता है आप वैसा करते हैं।

खतरनाक गतिविधियों या खुद को नुकसान पहुँचाने वाले कार्यों को धीरे–धीरे तेज किया जाता है और प्रमाणित भी करना होता है। अंत में हाथों पर सुई या ब्लेड से व्हेल का चित्र बनाना और 'खुदकुशी' के लिए तैयार होना होता है। पचास दिनों तक खास यांत्रिक मनःस्थिति में होने और ब्लैकमेल की वजह से उसके लिए उन निर्देशों का पालन करना आसान हो जाता है, जैसा एडमिनिस्ट्रेटर चाहता है।

लेकिन यह कहना गलत होगा कि इसके लिए सिर्फ बच्चे जिम्मेदार हैं या क्यूरेटर। अमेरिकन सायकोलॉजिकल एसोसिएशन ने दो वर्ष पहले एक रिपोर्ट प्रकाशित की, जो हिंसक/हॉरर वीडियो देखने वाले बच्चों पर आधारित है। उसने माना कि इसके लिए परिवार और समाज दोनों जिम्मेदार हैं। कई बार बच्चे की परवरिश जिम्मेदार होती है, तो कई बार पारिवारिक, हिंसा अकेलापन और निराशा। स्कूल की परिस्थितियाँ और गरीबी भी जिम्मेदार होते हैं।

ख) राष्ट्र, वस्तुतः धार्मिक नहीं, राष्ट्रीय सांस्कृतिक और सामुदायिक इकाई है। वह स्वेच्छा से एक राजनीतिक व्यवस्था के अधीन रहने वाला समुदाय है जो एक होने की भावना से जुड़ा रहता है। इसके पीछे जातीय प्रामाणिकता और परंपरा की शक्ति सक्रिय रहती है। यही कारण होता है कि उसका साहित्य बहुसंख्यक लोगों से संबद्ध होता है। स्पष्ट है कि एक तो सांस्कृतिक आधारों के संदर्भ में भाषा की भूमिका अधिक कारगर हो सकती है, दूसरे भाषा के आधार पर जाति की पहचान से राष्ट्र–निर्माण की प्रक्रिया मंद होती है और भाषाई–वैमनस्य बढ़ता है। जब हम अंग्रेजी की अपेक्षा अपनी भाषा को वरीयता देने की बात

उठाते हैं तो हिंदी ही समान रूप से सामने आती है क्योंकि वही हमारी आजादी की लड़ाई की भाषा रही है और वही जन–संपर्क की भाषा भी है। स्वतंत्रता के बाद का भारतीय समाज 'वंचितों का समाज' रहा है। अतः भाषा के आधार पर प्रांतों का पुनर्गठन करना, हिंदी को अंग्रेजी की प्रतिद्वंद्विता में सामने रखना तथा शुद्धतावादी/लोकवादी दृष्टि का सवाल सामने आना नई बात नहीं है। हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि अखिल भारतीय स्तर पर हिंदी–उर्दू–अंग्रेजी अपेक्षाकृत अधिक सिद्ध भाषाएँ हैं क्योंकि पचपन प्रतिशत भारतीयों की द्वितीय भाषा है।

फिशमैन ने भाषा–नीति के आधार पर राष्ट्रों को तीन वर्गों में रखा है। एक तो बुद्धिजीवियों का आधुनिकता से प्रभावित वह वर्ग जो जातीय प्रामाणिकता और महान परंपरा की शक्ति के दबाव से मुक्त होकर देश को एकसूत्रता में बांधने की ओर प्रवृत्त होता है। दूसरा, स्वदेशी भाषा को ही राष्ट्रभाषा का दावेदार मानने वाला वह वर्ग जो अपने चिंतन के पीछे सामाजिक एकता, जातीय प्रामाणिकता और महान परंपरा का दबाव महसूस करता है; और तीसरा, जटिल चिंतन–प्रक्रिया वाला वह वर्ग जो मानता है कि क्षेत्रीयता की स्थानिक प्रवृत्ति से प्रेरित सामाजिक वर्ग का युग बीत गया है और उससे ऊपर उठकर द्विभाषिक बनना व्यक्ति की नहीं वरन् राष्ट्र की नियति है। यहाँ भी केवल राष्ट्र के धरातल पर सिद्ध प्रादेशिक भाषा में और अंतर–प्रादेशिक संबंध–सूत्र–स्थापक भाषा के बीच द्विभाषिकता की बात जरूरी नहीं है बल्कि देश को आधुनिक बनाने और अन्य देशों से संबंध–स्थापना के लिए यह जरूरी है कि किसी एक विदेशी पाश्चात्य भाषा को स्वीकार कर दोहरी द्विभाषिकता को बढ़ावा दिया जाए।

ग) विकास के लिए ऊर्जा बहुत जरूरी होती है। किसी भी राष्ट्र के समग्र विकास तथा वहाँ की प्रति व्यक्ति ऊर्जा की खपत में सीधा संबंध पाया जाता है। सभ्यता के आरंभिक काल से आज तक प्रति व्यक्ति ऊर्जा की खपत निरंतर बढ़ती गई है। भारत एक विकासशील देश है, जो तेजी से विकास के मार्ग पर अग्रसर है। इसलिए ऊर्जा हमारे लिए बहुत जरूरी है। ऊर्जा के विभिन्न स्रोत हैं, जिनमें पारंपरिक तथा गैरपारंपरिक स्रोत दोनों शामिल हैं। जैसा कि हम जानते हैं, पूरी दुनिया में जीवाश्म ईंधन (fossil fuel) के भंडार सीमित हैं। ऐसा माना जाता है कि अगले कुछ दशकों में ये भंडार समाप्त हो जाएँगें। ऐसे में हमें ऊर्जा के नए–नए स्रोत अभी से तलाशने होंगे अन्यथा विकास का पहिया ठहर जाएगा। 'सौर ऊर्जा' इसी तरह की एक वैकल्पिक ऊर्जा है जिस पर आजकल बहुत ध्यान दिया जा रहा है। भारत के लिए सौर ऊर्जा बहुत बड़ा स्रोत बनने का सामर्थ्य रखती है। क्योंकि हमारा देश गर्म देश है यहाँ सूरज की किरणें लगभग पूरे साल उपलब्ध रहती हैं।

सौर ऊर्जा वह ऊर्जा है जो सीधे सूर्य की रोशनी से प्राप्त की जाती है। सौर ऊर्जा ही धरती पर मौसम एवं जलवायु की गतिशीलता का संचालन करती है। पृथ्वी पर मौजूद तमाम तरह के ऊर्जा स्रोतों का मूल सूर्य है। जीवन की समस्त गतिविधियाँ सूर्य से संचालित होती हैं। वनस्पतियाँ तथा जीव–जंतु अपने जैविक क्रियाकलापों के संचालन में सौर ऊर्जा का ही प्रयोग करते हैं। पेड़–पौधे 'स्वपोषी' कहे जाते हैं क्योंकि प्रकाश संश्लेषण (Photo-Synthesis) के जरिए वे अपना आहार स्वयं तैयार कर लेते हैं। इस प्रक्रिया में हरित लवक यानी क्लोरोफिल की उपस्थिति में वातावरणीय जलवाष्प तथा कार्बन डाईऑक्साइड के संयोग से वे कार्बोहाइड्रेट (प्रायः ग्लुकोज) का निर्माण करते हैं। इस रासायनिक प्रक्रिया में सौर विकिरण की अहम भूमिका होती है। ऊर्जा संरक्षण के नियम के अनुसार ऊर्जा कभी नष्ट नहीं होती है बल्कि उसका रूपांतरण होता है। प्रकाश संश्लेषण में विद्युत–चुंबकीय ऊर्जा पेड़–पौधों में रासायनिक ऊर्जा (ग्लुकोज) में बदल जाती है। जीव–जंतु प्रायः परपोषी होते हैं, जो अपने आहार के लिए इन वनस्पतियों पर आश्रित होते हैं। धरती पर मौजूद कोयला, पेट्रोलियम आदि जीवाश्म ईंधन सजीवों से निर्मित हैं, जिन्होंने सौर विकिरण का इस्तेमाल करते हुए रासायनिक ऊर्जा तैयार की थी।